कैरियर और राशि

व्यवसाय चयन में ज्योतिष अपनी विशेष भूमिका रखती है। वह ऐसे लोगों की सहायता कर सकती है जो व्यवसाय चयन में दिग्भ्रमित हो जाते है। सफलता रूपी गाड़ी के दो पहिए होते है एक प्रयत्न दूसरा भाग्य। भाग्य अनुकूल है तथा प्रयत्न में भी कमी नहीं है तो सफलता अवश्य मिलती है। यदि किसी से मिलने जाते हैं टेलीफोन पर टाईम ले लेते है। निर्धारित समय पर वहां पहुंचते है यह आपका प्रयत्न है। टेलीफोन पर समय लेने पर भी अन्य व्यक्ति आकस्मिक कार्य वश न मिलना आपका भाग्य है। इसी प्रकार व्यवसाय विषय में प्रयत्न एवं भाग्य के समन्वय होता है। अपनी सामर्थ्य एवं योग्यता के आधार पर व्यवसाय का चयन एवं तदनुकूल प्रयास सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है। व्यक्ति की सामर्थ्य का संकेत ग्रह स्थिति से मिलता है।

आजीविका के विषय में ज्योतिष में निम्नलिखित सिद्धान्त है। पहले जन्म कुण्डली के ग्रहों का षड्बल ज्ञात किया जाता है तथा बलिष्ठ एवं बलहीन ग्रहों का निर्धारण किया जाता है। इसके पश्चात् लग्न से, चन्द्रमा से तथा सूर्य से दशम् भाव के आधार पर विचार किया जाता है। सामान्य नियम के अनुसार लग्न से दशम् भाव जिस व्यक्ति का बलवान होता है, वह व्यक्ति शारीरिक श्रम से अपनी जीविका कमाता है। जिस व्यक्ति के जन्मकालिक ग्रह स्थिति के आधार पर चन्द्रमा से दशम् भाव लग्न एवं सूर्य के दशम् भाव की तुलना में अधिक बलवान हो, वह व्यक्ति शारीरिक श्रम न करके केवल बौद्धिक परिश्रम से अपनी आजीविका प्राप्त करता है। जिस जातक के सूर्य की राशि से दशम् भाव जन्म कुण्डली एवं चन्द्र कुण्डली की तुलना में अधिक बलवान है, वह व्यक्ति पैसे से पैसा कमाता है।

दशम् भाव के आधार पर लग्न, चन्द्र एवं सूर्य से दशम् भाव में जो बलवान ग्रह हो उसी के आधार पर आजीविका का निर्णय किया जाता है। यदि तीनों स्थितियों में कोई भी ग्रह स्थित नहीं हो तो उक्त भाव को देखने वाले बलवान ग्रह के आधार पर आजीविका का निर्णय किया जाता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि दशम् भाव पर किसी भी ग्रह की दृष्टि भी नहीं है तो फिर दशमेश के नवांश पति के आधार पर आजीविका का निर्णय किया जाता है।

ग्रहों के आधार पर आजीविका

दशम् भाव के स्वामी या दशम् भाव को पूर्ण दृष्टि से देखने वाले बलवान ग्रह के आधार पर व्यक्ति निम्नलिखित व्यवसाय करता है।

सूर्य- लाल पत्थर, सुगन्धित वस्तु, कीमती सामान, सोना-अनाज, गुड़-तेल, बिजली के समान, फोटोग्राफी, ऊन, सट्टा, आढ़त, दलाली, ठेकेदारी, आयात निर्यात, यातायात, केमिस्ट, अग्निशमन यंत्रों का व्यापार। इंजीनियरिंग, चिकित्साविभाग में कार्य, जौहरी अथवा जौहरी के यहां कार्य।

चन्द्र- जनरल मर्चेन्ट, किराणा, बच्चों के खिलौने, फैन्सी स्टोर, रेडीमेड गारमेंट्स, तरल पदार्थ, मेडिकल स्टोर, ट्रेवलिंग कम्पनी, विदेश व्यापार, जल से संबंध रखने वाली वस्तुओं का व्यापार, एजेन्सी, रत्न व्यवसाय, डेयरी, पेय पदार्थ, फलों का रस, ड्राइवर, चावल, पायलट, वकील। सिंचाई विभाग, जलप्रदाय विभाग, रेलवे में नौकरी। ग्लास फैक्ट्री में कार्य।

मंगल- वन में उत्पन्न वस्तुओं का व्यापार, भोजनालय, खनन उद्योग ईंटें बनाना, प्रोपर्टी डीलर, खेती में काम आने वाली वस्तुएं, आतिशबाजी, बिजली के समान, बर्तन का व्यापार, लाल वस्तु, भवन निर्माण सामग्री, पके हुए फल, सेना, पुलिस, न्यायाल अग्निशयन विभाग में नौकरी। रक्षा विभाग, दूतावास, विदेश विभाग, यातायात में सर्विस।

बुध- शेयर, सट्टा, लकड़ी का कारखाना, फर्नीचर की दुकान, तम्बाकू, रेडियो, टीवी, सब्जी का व्यापार, दलाली सेल्समैन, पुस्तक विक्रेता, मुनीम, वकील, न्यायालय में सर्विस, सी.ए., उधार देना, ताजा फल, रबड़, औषधि, जड़ी बूटी वनस्पति से संबंधित व्यापार।

गुरु- पुस्तक विक्रेता, खनिज से संबंधित व्यवसाय, स्कूल चलाना, लेखन कार्य, स्टेशनर्स, आभूषण विक्रेता, अध्यापक। चना, सरसों, दलहन, तिलहन का व्यापार, अधिकारी, जनप्रतिनिधि, न्यायाधीश शिक्षाविद।

शुक्र- मिठाई, कपड़ा, आभूषण, सौन्दर्य प्रसाधन, फर्नीचर, सूद पर रुपए देना, ठेकेदारी, कंस्ट्रक्शन एजेंसी, दवाई की दुकान, होटल, फैंसी स्टोर, घड़ीसाज इत्यादि व्यापार। आधुनिक तकनीकी से सम्बन्ध व्यवसाय, कम्प्यूटर, विद्युत उपकरण आयात-निर्यात, यात्रा कम्पनी, चिकित्सालय, पशुओं का व्यापार, किराणा, इंजीनियर, सुगन्धित वस्तु, विलासिता या मनोरंजन की वस्तु।

शनि- लौहा, तेल, रबर कोलतार, कोयला, पेट्रोल, चमड़ा, पत्थर का व्यापार, मुर्गीपालन, घ श्रेणी कर्मचारी देशी शराब, शूज स्टोर, नमक, गैस का व्यापार।

राहु- लकड़ी, फर्नीचर, बच्चों के खिलौने, आतिशबाजी के सामान, बिजली के समान को व्यापार, एजेन्सी, एडवरटाइजमेंट, टेलरिंग, जमीन का लेन-देन। नगरपालिका में सर्विस, पुस्तकालय, पोस्ट आफिस में नौकरी।

केतु- जूट, बारदाना, पैकिंग का सामान, कागज के सामान, औषधि का व्यापार, पायलट, अभिनेता, पुरातत्व पर्यटन विभाग में नौकरी, इलेक्ट्रिकल इंजीनियर।

ग्रह युति और व्यवसाय

- सूर्य+मंगल युति= सेना, पुलिस, रक्षा विभाग में नौकरी
- सूर्य+बुध यति= ज्योतिषी, भविष्यवक्ता, वकील
- सूर्य+गुरु युति= प्रशासनिक अधिकारी
- सूर्य+चतुर्थेश युति= फर्नीचर, लकड़ी व्यवसाय
- चन्द्र+शुक्र युति= इत्र, डेयरी व्यवसाय, फैंसी स्टोर
- चन्द्र+गुरु युति= अपने क्षेत्र का प्रतिष्ठित व्यक्ति
- मंगल+शनि युति= इंजीनियर
- शुक्र+बुध युति= हेराफेरी
- चन्द्र+राहु युति= असामाजिक कार्य, चिकित्सा विज्ञान के लिए विशेष
- सूर्य+शनि= डॉक्टर
- 1-2-5-10 भावों में
- सूर्य+मंगल या शुक्र युति= नेत्र चिकित्सक
- 1-2-6-10-11 भावों में
- बुध+शुक्र+शनि= चर्म रोग चिकित्सक
- 6-10 भावों में
- सूर्य+बुध+शुक्र यति= दन्त चिकित्सक
- 1-2-6-10-11 भावों में

उपर्यक्त युति के अतिरिक्त दृष्टि बल से भी व्यवसाय विचार करना संभव है।

विवाह में बाधा आ रही है तो यह करें

कुछ लोग ऐसे होते हैं जिनके विवाह में बहुत विलंब होता है। कई बार बात बनते-बनते टूट जाती है। इसके कई कारण हो सकते हैं। यदि आपके साथ भी यही समस्या है तो यह उपाय करें-

उपाय

अपने सामने मां भगवती का सुंदर चित्र रखकर शुद्धता पूर्वक पूजा-अर्चना करें। फूल चढ़ाएं। इसके बाद 108 बार नीचे लिखे मंत्र का जप करें। इस बात का ध्यान रखें कि जप करते दौरान पूरे समय शुद्ध घी का दीपक जलता रहे। यह प्रयोग 45 दिन तक करें।

मंत्र

सदेवि नित्यं परितप्यमानस्त्वामेव सीतेत्यभिभाषमाण:।

दृढ़व्रतो राजसुतो महात्मा तवैव लाभाय कश्तप्रयत्न:।।

हाल बताएं तिल

शरीर के विभिन्न स्थानों पर स्थित तिल का निम्न प्रकार से शुभाशुभ फल होता है-

- मस्तक पर तिल होने पर पुरुष समाज में प्रतिष्ठित एवं स्त्रियों के मस्तक पर होने पर वह किसी उच्चाधिकारी की पत्नी बनती है।
- ललाट पर तिल होने पर जातक धन सम्पन्न एवं ऐश्वर्यशाली होता है।
- यदि भौह पर तिल हो तो विदेश यात्रा से आर्थिक लाभ प्राप्त होने की संभावना रहती है।
- आंख पर तिल होने पर जातक अधिकार सम्पन्न होता है।
- गाल पर तिल होने पर जातक ऐश्वर्य संपन्न होता है।
- ऊपरी होंठ पर तिल होने से जातक धनी एवं थोड़ा जिद्दी होता है।

धन-दौलत के लिए लकी मॉन्गूज

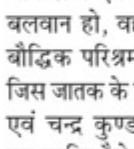

फेंगशुई के अनुसार अच्छी किस्मत और धन-दौलत की आमद बढ़ाने के लिए इस मॉन्गूज का घर या कारोबारी जगह पर रखना जरूरी है। इसकी वजह मॉन्गूज का धन के देवता कुबेर से जुड़ा होना है। इसे एक नजर में देखते ही आप अंदाज लगा लेंगे कि इसका जुड़ाव रुपए-पैसों से है। ऐसा इसलिए, क्योंकि यह मॉन्गूज ढेरों सिक्कों के ऊपर बैठा नजर आता है। फेंगशुई विशेषज्ञों के अनुसार इसे घर, दफ्तर या व्यापार स्थल पर दक्षिण-पूर्व में रखना चाहिए।

हर मुसीबत दूर करता है श्रीगणेश का यह रूप

हिंदू परम्परा में कोई भी शुभ कार्य भगवान श्रीगणेश की पूजा के बिना नहीं किया जाता। भगवान श्रीगणेश को विघ्न का नाश करने वाला माना जाता है। गणेश के कई रूप प्रसिद्ध हैं और लगभग हर रूप में उनका अलग महत्व है। कई तंत्र प्रयोगों में भगवान गणेश का स्मरण किया जाता है।

धर्म ग्रंथों जब गणपति कमल पर विराजित हों तो वे घर की सारी नकारात्मक शक्तियों को निष्क्रिय कर देते हैं। कमल पर बैठे गणेश के इस रूप को विघ्नहर्ता कहा जाता है। इसके बारे में कहा जाता हैं कि गणेश ने अपने कमल के फूल की गंध से समस्त देव सेना को बेहोश कर दिया था। इसलिए इस गणेश के कमल के फूल पर बैठे या फूल को हाथ में लिए हुए स्वरूप को विघ्न को मिटाने वाला माना जाता है।

गणेश का यह स्वरूप सकारात्मक उर्जा उत्पन्न करने में सक्षम माना जाता है, गणेश के इस स्वरूप को यदि घर के मध्य स्थापित कर लिया जाए तो घर में उपस्थित कई तरह के वास्तुदोष में कमी आने के साथ ही जो काम सालों से नहीं बन पा रहा हो विघ्न आ रहा हो तो गजानन के इस रूप की स्थापना से हर काम शीघ्र पूर्ण होने के साथ ही जीवन में आने वाली मुसीबतों में कमी आने लगती है।

कमल पर बैठे श्रीगणेश की पूजा करते समय इस मंत्र का जप करें तो शीघ्र ही शुभ फल मिलता है-

ऊँ गं गणपत्यै नम:

ग्रह और दशा

आपकी विचारधारा ग्रह और दशाओं से प्रभावित होती है। आप पर जिस ग्रह का प्रभाव होगा, आपकी सोच और मनोदशा वैसी होगी। यह बात आप बिना जन्म कुंडली के भी जान सकते हैं। इस लेख में केवल इस बिंदु पर ही प्रकाश डाला जा रहा हैं कि आप पत्नी कैसी पसंद करते हो...

- यदि आप सोचते हैं कि आपकी पत्नी धार्मिक विचारों वाली, बड़े कुटुंब की हो तो आप बृहस्पति ग्रह से प्रभावित है। बृहस्पति ग्रह से प्रभावित जातक की इच्छा होती है कि उसकी पत्नी उसका सम्मान करें। धन की लालसा न रखती हो। आंखें बड़ी-बड़ी हों।
- यदि आपके विचार से आपकी पत्नी पूर्ण परिपक्व हो, ज्यादा हंसी-मजाक न करे। गंभीर विचारधारा की हो तो आप शनि ग्रह से प्रभावित है। शनि ग्रह से प्रभावित जातक की सोच होती है कि उसकी पत्नी फिजूलखर्ची नहीं करें।
- यदि आप सोचते हो कि आपकी शादी जल्दी हो और पत्नी हंसमुख स्वभाव की हाजिर जवाब, तेज तर्रार हो। उसके नयन-नक्श तीखे हों मजबूत कद काठी की समझदार हो तो आप सूर्य ग्रह से प्रभावित है। सूर्य प्रभावित व्यक्ति की इच्छा होती है कि उसकी पत्नी आकर्षक हो।
- यदि आप सोचते हो कि मेरी शादी तभी हो, जब खूब पैसा इकट्ठा हो जाए और पत्नी चतुर, व्यवसायिक विचारधारा की कुशल, फटाफट काम करने वाली हो, हर काम में लाभ-हानि देखती हो तथा तनाव चेहरे पर नहीं झलके तो आप बुध ग्रह से प्रभावित है। बुध से प्रभावित जातक की इच्छा होती है कि उसकी पत्नी बढ़िया तरीके से बोले। कभी खाली न बैठे, कुछ न कुछ करती रहे। हर कार्य में आपको सलाह दें।
- यदि आप सोचते हैं कि आपकी पत्नी नजाकत वाली न होकर रफ-टफ हो, उसका गौर वर्ण, गोल चेहरा हो, साहसी एवं खूब मेहनती हो। हर कार्य जोश से करें। निडर और कंजूस न हो। समझदार और क्रोध नहीं करने वाली रोबदार हो तो आप पर मंगल का प्रभाव है।
- यदि आप सोचते हो कि आपकी पत्नी बहुत सुंदर हो और जब हंसे तो उसके गालों में गड्ढा पड़े। उसकी सोच में फैशन, कला व रचनात्मकता झलके। आपकी प्रशंसा करने वाली आधुनिक विचारों से युक्त हो। संगीत, नृत्य या गायन में रुचि हो तो आप पर शुक्र का प्रभाव है। यदि एक से अधिक गुण अन्य ग्रह से मेल खाते है तो उस ग्रह का उतना ही प्रभाव आप पर है।

जब बच्चे को बचाना हो बुरी नजर से

बच्चों को बुरी नजर बहुत जल्दी लग जाती है। नजर लगने के कारण बच्चा अचानक अनमना हो जाता है, दूध नहीं पीता और लगातार रोता रहता है। ऐसे में नीचे लिखे उपाय करने से बच्चे को लगी बुरी नजर दूर हो जाती है तथा बच्चा फिर से स्वस्थ हो जाता है।

उपाय

- बच्चे को नजर लगी हो तो 225 ग्राम फिटकरी को बच्चे के ऊपर से 21 बार उसारकर चौराहे पर फेंक दें तथा पीछे मुड़कर न देखें।
- एक नींबू लेकर हनुमानजी का स्मरण करते हुए नीचे लिखे मंत्र का जप करते हुए पीड़ित बच्चे के सिर से पैर तक 21 बार उसारें। फिर उस नींबू को ले जाकर किसी चौराहे पर काटकर वहीं फेंक दें। छुरी भी वहीं छोड़ दें। बुरी नजर दूर हो जाएगी।

मंत्र- ऊँ श्री हनुमते नम:।

- बुरी नजर से पीड़ित बच्चा यदि दूध नहीं पी रहा हो तो रविवार के दिन बच्चे के सिर से तीन बार दूध उसारकर काले कुत्ते को पिला दें। बच्चा दूध पीने लगेगा।
- शनिवार के दिन हनुमानजी के मंदिर जाएं। पूजन के बाद हनुमानजी की मूर्ति के पैरों का सिंदूर लाकर बच्चे के लगा दें। कितनी भी बुरी नजर हो तुरंत उतर जाएगी।
- बच्चे को बुरी नजर से बचाने के लिए उसके गाल पर काजल का टीका अवश्य लगाएं।

इस पौधे से नहीं होता जादू-टोने का असर

तंत्र शास्त्र में अनेक वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है जैसे- काली हल्दी, शंख, रत्न, बांदा, श्रीफल, एकाक्षी नारियल, कौड़ी आदि। इन सबका अलग-अलग महत्व व प्रयोग है। यह सब चमत्कारी वस्तुएं हैं।

ऐसा ही एक चमत्कारी पौधा है अफेद आक (आंकड़ा)। यह बहुत चमत्कारी पौधा है। यह सामान्य रूप से पाएं जाने वाले आक के पौधे से अलग होता है। इसका उपयोग की तांत्रिक क्रियाओं में किया जाता है। तांत्रिक प्रयोगों से बचने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। जिस घर में यह लगा होता है उस घर किसी भी प्रकार के तंत्र-मंत्र या जादू-टोने का असर नहीं होता है।

इस आक के पौधे से भी अधिक चमत्कारी है इससे निर्मित गणेश प्रतिमा। तंत्र शास्त्र में यह बताया गया है कि यदि सफेद आक से निर्मित गणेश प्रतिमा की विधिवत पूजा की जाए तो सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। यह गणेश प्रतिमा अद्भुत व चमत्कारी होता है। इसकी पूजा बहुत नियम और कायदों से करनी पड़ती है। नियम से पूजा ना होने पर इसका उचित लाभ नहीं मिल पाता है। इसलिए यदि आप चाहते हैं कि आपके घर में किसी तरह के तंत्र-मंत्र का असर ना हो तो ये पौधा घर में जरुर लगाएं। इसके अलावा सफेद आक की जड़ को भी तंत्र में बहुत उपयोगी माना जाता है।

क्यों की जाती है गोदभराई की रस्म!

हिंदू धर्म में गर्भवती स्त्री की सातवें महीने में गोदभराई की रस्म की जाती है। उसके बाद डिलिवरी के लिए उसे अपने मायके भेज दिया जाता है। कभी आपने सोचा है कि गोदभराई की रस्म क्यों कि जाती है? दरअसल गोद भराई की पूरी रस्म होने वाले बच्चे के स्वास्थ्य के लिए की जाती है। इस विशेष पूजा से गर्भ के दोषों का निवारण किया जाता है। इसमें महिला को बड़े-बूढ़ो का आशीर्वाद तो मिलता ही है, साथ ही इसमें गर्भवती स्त्री की गोद फल और सुखे मेवों से भरी जाती है। फल और सूखे मेवे पौष्टिक होते हैं। गर्भवती महिला को ये फल और मेवे इसीलिए दिए जाते हैं कि वो इन्हें खाए, जिससे गर्भ में बच्चे की सेहत अच्छी रहे। फल और सूखे मेवों से शरीर में शक्ति तो आती ही है साथ ही इनके तेलीय गुणों के कारण इसमें चिकनाई भी आ जाती है। जिससे प्रसव के समय महिला को कम से पीड़ा होती है।

पूजा में घी का दीपक ही क्यों लगाना चाहिए?

दीपक ज्ञान और रोशनी का प्रतीक है। पूजा में दीपक का विशेष महत्व है। आमतौर पर विषम संख्या में दीप प्रज्जवलित करने की परंपरा चली आ रही है। दरअसल दीपक जलाने का कारण यह है कि हम अज्ञान का अंधकार मिटाकर अपने जीवन में ज्ञान के प्रकाश के लिए पुरुषार्थ करें। हमारे धर्म शास्त्रों के अनुसार पूजा के समय दीपक लगाना अनिवार्य माना गया है। दीपक के रूप में हम संसार के लिए कहते हैं आरती कर घी का दीपक लगाने से घर में सुख समृद्धि आती है। इससे घर में लक्ष्मी का स्थाई रूप से निवास होता है। साथ ही हमारे शास्त्रों के अनुसार पूजन में पंचामृत का बहुत महत्व माना गया है और घी उन्हीं पंचामृत में से एक माना गया है।

इसीलिए घी का दीपक लगाया जाता है। साथ ही ज्योतिष के अनुसार दीपक को सकारात्मकता का प्रतीक व दरिद्रता को दूर करने वाला माना जाता है। ऐसी भी मान्यता है कि घर में घी का दीपक जलाने से वास्तुदोष भी दूर होते हैं। गाय के घी में रोगाणुओं को भगाने की क्षमता होती है। यह घी जब दीपक में अग्नि के संपर्क से वातावरण को पवित्र बना देता है। प्रदूषण दूर होता है। दीपक जलाने से पूरे घर को फायदा मिलता है। चाहे वह पूजा में सम्मिलित हो अथवा नहीं। दीप प्रज्जवलन घर को प्रदूषण मुक्त बनाने का एक क्रम है।

सुखी दाम्पत्य जीवन के अचूक उपाय

पति-पत्नी के बीच तनाव होना आम बात है। जहां प्यार होता है वहां विवाद भी होता ही है लेकिन जब यह विवाद अधिक हो जाता है तो जीवन नरक के समान लगने लगता है।

पति-पत्नी में विवाद के कई कारण हो सकते हैं। यदि आपके साथ भी यही समस्या है तो नीचे लिखे उपाय करने से आपकी यह समस्या हल हो जाएगी।

उपाय

- गोमती चक्र को लाल सिंदूर की डिब्बी में घर में रखें तो दाम्पत्य जीवन में सुख-शांति रहती है।
- पंचरत्न सोते समय अपने सिरहाने रखें, प्रात:काल उठकर सर्वप्रथम उसका दर्शन करने से कुछ समय के बाद पति व पत्नी में विवाद समाप्त हो जाता है।
- प्रतिदिन एक गेंदे का फूल जो पूर्ण विकसित हो, उस पर थोड़ा सा कुंकुम लगाकर किसी देवमूर्ति के सामने या तुलसी के पौधे पर चढ़ाने से पति-पत्नी के बीच का तनाव कम हो जाता है।
- किसी एक छोटे बच्चे को प्रतिदिन उसकी मनचाही वस्तु कुछ दिनों तक लाकर दें। ऐसा करने से दाम्पत्य जीवन में आ रही परेशानियां स्वत: ही समाप्त हो जाती है।
- यदि पति-पत्नी के बीच बात ज्याद ही बिगड़ जाए तो तीन गोमती चक्र लेकर घर के दक्षिण में हलूं बलजाद कहकर फेंद दें, मतभेद समाप्त हो जाएगा।